श्री गुरु नानक देव खालसा महाविद्यालय
(दिल्ली विश्वविद्यालय)
देव नगर, नई दिल्ली – 110005

श्री गुरु नानक देव खालसा महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय और भारतीय अनुवाद परिषद्, नई दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में "अनुवाद व्यवहार और सिद्धांत" विषय पर 15 दिवसीय प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्‌घाटन 4 मार्च 2021 को भारतीय अनुवाद परिषद् के निदेशक और दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के प्रो. पूरनचंद टंडन द्वारा किया गया। इस सत्र में श्री गुरु नानक देव खालसा कॉलेज के प्राचार्य प्रो. गुरमोहिंदर सिंह, महाविद्यालय के हिंदी विभाग की अध्यक्ष डॉ. दीपमाला, वरिष्ठ प्राध्यापिका डॉ. रेनू दुग्गल, डॉ. अमरजीत कौर और डॉ. अंजुबाला सहित अन्य शिक्षकगण एवं प्रतिभागी सम्मिलित हुए।

कार्यक्रम के उद्‌घाटन सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. पूरनचंद टंडन ने अनुवाद के क्षेत्र में रोज़गार की संभावनाओं और उसके सैद्धांतिक और व्यावहारिक पक्ष पर अपने विचार रखे। छात्रों को संबोधित करते हुए उन्होंने "अच्छे अनुवादक के गुण और दोषों पर विचार किया और उसके दुष्परिणामों पर चर्चा की। अनुवाद के महत्त्व पर ज़ोर देते हुए उन्होंने कहा कि अनुवाद न केवल एक विषय के रूप उपयोगी है अपितु वैश्विक संस्कृति और सभ्यता को जानने का एक माध्यम भी है।" महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. गुरमोहिंदर सिंह ने अनुवाद की विविध क्षेत्रों में आवश्यकता और उपयोगिता पर ज़ोर देते हुए कहा कि "मुझे प्रसन्नता है कि महाविद्यालय का हिंदी विभाग लगातार दूसरे वर्ष इस पाठ्यक्रम का आयोजन कर रहा है। 'अनुवाद' की महत्ता वर्तमान समय में बहुत अधिक है और इस विषय की तकनीकी, सैद्धांतिक और व्यावहारिक जानकारी छात्रों के लिए रोज़गार की अपार संभावनाएँ उत्पन्न करती है। मुझे विश्वास है कि इस पाठ्यक्रम के प्रतिभागी अनुवाद कार्य में योग्यता प्राप्त कर लाभान्वित होंगे और अगले वर्ष भी इस पाठ्यक्रम को हम नई ऊर्जा के साथ पुनः संपन्न करेंगे।" उक्त कार्यक्रम का संचालन डॉ. अंजुबाला ने किया और स्वागत वक्तव्य विभाग की वरिष्ठ प्राध्यापिका डॉ. रेनू दुग्गल ने दिया। डॉ. अमरजीत कौर ने उद्‌घाटन सत्र के अंत में सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया।

अनुवाद प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम की शुरुआत के औपचारिक उद्‌घाटन सत्र के पश्चात् अनुवाद क्षेत्र के विविध विशेषज्ञों ने अनुवाद संबंधित विभिन्न विषयों पर 'ऑनलाइन' कक्षाएँ लीं। छात्रों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए यह कक्षाएँ अधिकांशतः 3:00 बजे के बाद ली गयीं जिससे छात्रों की सामान्य अकादमिक गतिविधियाँ प्रभावित न हों। जिन विषयों पर विशेषज्ञों ने बात की वे अनुवाद के सैद्धांतिक और व्यावहारिक पक्षों से जुड़े थे। अनुवाद की प्रासंगिकता और महत्त्व, अनुवाद का वैश्विक परिप्रेक्ष्य, कार्यालयी अनुवाद, संचार माध्यम और अनुवाद, सामाजिक सांस्कृतिक सन्दर्भ और अनुवाद, सहित्यिक अनुवाद और उसका स्वरूप, प्रयोजनमूलक हिंदी और अनुवाद, बैंक, वाणिज्य और विधि क्षेत्रों में अनुवाद, भाषा का मानकीकरण और अनुवाद, कोश विज्ञानं और अनुवाद, सिनेमा और अनुवाद, राजभाषा हिंदी और अनुवाद, तत्काल भाषांतरण एवं दुभाषिए संबंधी प्रशिक्षण तथा पारिभाषिक शब्दावली की उपयोगिता जैसे विषयों पर विशेषज्ञों ने गंभीर चर्चा करते हुए इन विषयों की बारीक़ियों पर अपने विचार रखे एवं प्रतिभागियों की जिज्ञासाओं और प्रश्नों के उत्तर दिए। कक्षाओं के पश्चात् छात्रों को प्रतिदिन उस दिन के विषय से संबंधित प्रश्नावली दी जाती थी जिनके उत्तर देना अनिवार्य था जिससे, उनकी सतत प्रगति और विषय पर बनी उनकी समझ की जाँच हो सके। कार्यक्रम के समन्वयकों श्री महेन्द्र प्रताप सिंह, डॉ. मनीष ओझा एवं श्री अविनाश कुमार ने इस कार्य में सक्रिय भूमिका निभाई।

24 मार्च 2021 को पाठ्यक्रम का समापन सत्र आयोजित किया गया। इस सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रो. पूरनचंद टंडन ने सभी प्रतिभागियों को शुभकामनाएँ दीं। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. गुरमोहिंदर सिंह ने 15 दिवसीय पाठ्यक्रम के सफल आयोजन के लिए हिंदी विभाग को बधाई दी और भविष्य में भी ऐसे कौशल संवर्द्धक कार्यक्रमों का आयोजन करते रहने के लिए कहा। अंत में सभी प्रतिभागियों को प्रमाण–पत्र वितरित किए गए।